



पत्र-पुष्प



नव वर्ष की शुभकामनायें - 2022

**“सदा योगयुक्त, युक्तियुक्त बन हर कार्य में सफलता प्राप्त करने का विशेष पुरुषार्थ”
नये वर्ष के लिए दादी जी की शुभ प्रेरणायें (19-12-21)**

परमप्रिय अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रख, फालो फादर कर सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सभी ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

नये वर्ष के आगमन के साथ, नये स्वर्णिम युग की ढेर सारी शुभ कामनायें, हार्दिक बधाईयां,

बाद समाचार - नया वर्ष, नया उमंग, नया उत्साह लेकर आ रहा है। इस वर्ष भारतवासी विशेष आजादी का अमृत महोत्सव खूब धूमधाम से मनाने की तैयारी कर रहे हैं। बाबा के बच्चे तो अमृत महोत्सव के साथ, स्वर्णिम युग के आगमन की भी तैयारी कर रहे हैं। हम सबको मीठे बाबा ने लक्ष्य दिया है कि बच्चे विश्व को स्वर्णिम बनाने के लिए अपने संस्कारों को भी स्वर्णिम (पवित्र) बनाओ। विश्व परिवर्तन के पहले स्व का परिवर्तन करो। ईश्वरीय पढ़ाई के चारों ही सबजेक्ट में फुल अटेन्शन रखकर सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। मीठे बापदादा का विशेष इशारा है बच्चे, दो बातों की स्मृति रख सदा योगयुक्त और युक्तियुक्त बनो: 1- सारथी 2- साक्षी। कोई भी कर्म करते जितना समय सारथी अर्थात् आत्म-अभिमानि स्थिति में स्थित रहेंगे उतना योगयुक्त सहज बन जायेंगे। साथ-साथ स्वयं के व सर्व के पार्ट को साक्षी हो, न्यारे प्यारे बन देखना है। कभी कोई के पार्ट को देख स्वयं डिस्टर्ब नहीं होना है। तो इस नये वर्ष में सभी विशेष अटेन्शन रख ब्रह्मा बाप को फालो करते हुए सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने के पुरुषार्थ में रस करें। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सेवा के लिए जो भी समय मिला है उसमें सरकार के साथ मिलकर ऐसी सेवायें करें जो परमात्म प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा जाये और हर एक आत्मा तक ईश्वरीय सन्देश पहुंच जाए।

बाकी अभी तो जनवरी मास हम सबके अति प्रिय ब्रह्मा बाबा का स्मृति सो समर्थी मास है। सभी ब्रह्मा वत्स पूरा ही मास अन्तर्मुखी बन अव्यक्त वतन की सैर करेंगे। समय को देखते हुए सभी स्थानों पर यदि संगठित रूप में योग भट्टियों के कार्यक्रम चलते रहें तो बहुत अच्छा वातावरण बनेगा। इतनी सब पवित्र आत्माओं के शुद्ध शक्तिशाली संकल्प विश्व परिवर्तन की गति को और भी फास्ट करेंगे। हम सबकी अखण्ड तपस्या ही दुनिया की अनेक समस्याओं को समाप्त करेगी। प्रतिदिन लवलीन स्थिति का अनुभव करने के लिए मुरली के साथ प्वाइंट्स भी भेजी जा रही हैं, जिस पर सभी पूरा दिन अभ्यास करें। सबके अन्दर एक ही शुद्ध संकल्प इमर्ज रूप में हो “परिवर्तन”, तभी पुरानी दुनिया परिवर्तित हो नई स्वर्णिम दुनिया आयेगी।

बाकी मधुबन बेहद घर का विशेष आकर्षण हर ब्राह्मण आत्मा के दिल में दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। सभी का बुद्धियोग मधुबन, बाबा और मुरली में सदा ही लगा हुआ है। सब अपने बेहद घर में आने का इन्तजार करते रहते हैं।

यहाँ सभी स्थानों पर बहुत अच्छी योग भट्टियों के कार्यक्रम चल रहे हैं। अच्छा!

सभी को विशेष नये वर्ष की नये उमंग-उत्साह की हार्दिक बधाई। बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



ब्रह्मा बाप को फालो करते हुए समान व सम्पन्न बनो

1) ब्रह्मा बाप को फालो करना अर्थात् उनका साथ निभाना। साथी अर्थात् हर कदम में, हर संकल्प में, बोल में साथ निभाने वाले। जो सच्चे साथी हैं उन्हीं का हर एक कदम स्वतः ही बाप समान चलता रहता है। यहाँ वहाँ हो नहीं सकता। सच्चे साथी को मेहनत नहीं करनी पड़ती। सच्चे साथी बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में सदा यही समाया हुआ रहता है कि मैं बाप का, बाप मेरा।

2) सदा फालो फादर करने के लिए अपनी बुद्धि को दो स्थितियों में स्थिति रखो। बाप को फालो करने की स्थिति है - सदा अशरीरी भव, विदेही भव, निराकारी भव। ब्रह्मा बाप को फालो करना अर्थात् सदा अव्यक्त स्थिति भव, फरिश्ता स्वरूप भव, आकारी स्थिति भव। इन दोनों स्थितियों में स्थित रहना फालो फादर करना है। इससे नीचे व्यक्त भाव, देह भान, व्यक्ति भाव, इसमें नीचे नहीं आओ।

3) सर्व प्राप्ति स्वरूप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है “फालो फादर”। जीवन में बचपन से फालो करने के अनुभवी तो हो ही। बचपन में भी बाप बच्चे को अंगुली पकड़ चलने में, उठने-बैठने में फालो कराते हैं। फिर जब गृहस्थी बनते हैं तो भी पति पत्नी को एक-दो के पीछे फालो कर चलना सिखलाते हैं। फिर गुरु करते हैं तो गुरु के फालोअर्स बनते हैं अर्थात् फालो करने वाले। तो लौकिक जीवन में आदि से अन्त तक फालो करना होता है। ऐसे अलौकिक पारलौकिक बाप भी एक ही सहज साधन बताते हैं - क्या करूँ, कैसे करूँ, ऐसे करूँ या वैसे करूँ, इन सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है - “फालो फादर”।

4) साकार रूप में हर कर्म सिखलाने के लिए पूरे 84 जन्म लेने वाली ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म में, कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने। कर्मातीत बनने का एकजैम्पुल बने। तो साकार जीवन को फालो करो।

5) पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है - ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्मचारी बनना। ब्रह्मचारी अर्थात् ब्रह्मा के आचरण पर चलने वाले, जिसको फालो फादर कहा जाता है क्योंकि फालो ब्रह्मा बाप को करना है। शिव बाप के समान स्थिति में बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करना है। हर कदम में ब्रह्मचारी।

6) जैसे इस झूठ खण्ड के अन्दर ब्रह्मा बाप को सत्यता की अर्थॉरिटी का प्रत्यक्ष साकार स्वरूप देखा। उनके अर्थॉरिटी के बोल कभी भी अहंकार की भासना नहीं देते। मुरली में कितनी अर्थॉरिटी के बोल हैं! उस अर्थॉरिटी के बोल में स्नेह समाया हुआ है, निर्माणता है, निर-अहंकार है इसलिए अर्थॉरिटी के बोल प्यारे और प्रभावशाली होते हैं। तो फालो फादर। इस साकारी दुनिया में साकार ‘एकजैम्पल’ ब्रह्मा बाप ही हैं। तो जैसे ब्रह्मा बाप को कर्म में, सेवा में, सूरत से, हर चलन से चलता-फिरता अर्थॉरिटी स्वरूप देखा, ऐसे फालो फादर करने वालों में भी स्नेह और अर्थॉरिटी, निर्माणता और महानता - दोनों साथ-साथ दिखाई दें।

7) ब्रह्मा बाप की अति न्यारी और अति प्यारी स्थिति का सिम्बल है कमल-आसन। तो अपने आपको चेक करो कि मैं बाप समान कमल-आसनधारी हूँ? अति न्यारे की निशानी है - वह बाप और सर्व परिवार के अति प्यारे होंगे। ब्रह्मा बाप समान चार बातों में न्यारा बनना है: 1- अपने देहभान से न्यारा। 2- इस देह के जो सर्व सम्बन्ध हैं, दृष्टि से, वृत्ति से, कृति से - उन सबसे न्यारा। (3) देह के विनाशी पदार्थों में भी न्यारापन। कोई भी पदार्थ कर्मेन्द्रियों को विचलित न करे। आसक्ति भाव उत्पन्न न हो। (4) पुराने स्वभाव, संस्कार से न्यारा।

8) जैसे साकार ब्रह्मा बाप सेवा में रहते, समाचार सुनते-सुनते एकान्तवासी बन जाते थे। घण्टे के समाचार को भी 5 मिनट में सार समझ बच्चों को भी खुश किया और अपनी अन्तर्मुखी, एकान्तवासी स्थिति का भी अनुभव कराया। ऐसे फालो फादर करो। ब्रह्मा बाप ने कभी नहीं कहा कि मैं बहुत बिजी हूँ लेकिन बच्चों के आगे एकजैम्पल बने। अभी समय प्रमाण इस अभ्यास की आवश्यकता है।

9) सर्व के सहयोगी, स्नेही जरूर बनो, गुण ग्राहक जरूर बनो लेकिन फालो फादर। ब्रह्मा बाप की लास्ट स्टेज राजऋषि की देखी इतना बच्चों का प्यारा होते भी, सामने देखते हुए भी न्यारापन ही देखा, बेहद का वैराग्य - यही स्थिति प्रैक्टिकल में देखी। कर्मभोग होते भी कर्मेन्द्रियों पर अधिकारी बन अर्थात् राजऋषि बन सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव कराया। तो फालो फादर। कोई भी राज्य कारोबारी धोखा न दें।

10) जैसे ब्रह्मा बाप के संकल्प में भी सर्व को विशेष बनाने का हर समय उमंग-उत्साह रहा। अपनी वृत्ति द्वारा हर आत्मा को उमंग-उत्साह में लाया। वाणी द्वारा हिम्मत दिलाई, नाउम्मीद को उम्मीद में लाया, निर्बल आत्मा को उड़ती कला की विधि से उड़ाने के निमित्त

बनें। हर एक को सेवा के योग्य बनाया। ब्रह्मा बाप के हर बोल अनमोल, मधुर, युक्तियुक्त थे। ऐसे फालो फादर करो।

11) ब्रह्मा बाप बच्चों के साथ हर कर्म में साथी बन कर्मयोगी बनाया। सिर्फ साक्षी होकर देखा नहीं लेकिन स्थूल कर्म के महत्व को अनुभव कराने के लिए कर्म में भी साथी बनें। जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख बच्चे स्वतः ही करेंगे – इस पाठ को सदा कर्म करके पढ़ाया। बाल से बाल रूप, युवा से युवा रूप और बुजुर्ग से बुजुर्ग रूप बन सदा आगे बढ़ाया। हर एक को इतना प्यार दिया जो हरेक समझता कि बाबा मेरा है। हर आत्मा की विशेषता देखी। सर्व के प्रति शुभचित्तक रहे। तो इन सभी बातों में समान बनना अर्थात् फालो फादर करना।

12) बाप समान मौज की जीवन का अनुभव करने के लिए सहनशीलता के गुण को धारण करो। ब्रह्मा बाप इसी विशेषता के कारण सदा अटल, अचल रहे। सहनशीलता के अनेक पेपर आये, जैसे लोगों द्वारा अपशब्द वा अत्याचार हुए। कई ब्राह्मण बच्चों ने छोटी मोटी बातों में असन्तुष्ट हो सामना किया, विघ्न रूप बनें। कई ट्रेटर भी बन गये। ब्रह्मा बाप ने असन्तुष्ट को सन्तुष्ट करने की भावना से, सदा कल्याण की भावना से, सहनशीलता की साइलेन्स पावर से हर एक को आगे बढ़ाया। सामना करने वाले को भी मधुरता और शुभ भावना, शुभ कामना से सहनशीलता का पाठ पढ़ाया। तो आप बच्चे भी ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो। फालो फादर कर बाप समान बनो।

13) ब्रह्मा बाप मन-बुद्धि से सम्पूर्ण समर्पित हुए। हर कर्म में हर समय बाप और श्रीमत की स्मृति रही। स्वयं को निमित्त समझ हर कर्म में न्यारे और प्यारे रहे। देह के सम्बन्ध से, मैं-पन का त्याग किया। सदा आज्ञाकारी रहे। स्वर्ग पुरुषार्थ में, यज्ञ-पालना में निमित्त बने। स्थापना का कार्य विशाल होते हुए भी किसी भी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। हर समय “जी हाजिर” का प्रत्यक्ष स्वरूप सहज रूप में देखा, तो फालो फादर करो।

14) ब्रह्मा बाप हर संकल्प में भी वफादार रहे, जैसे पतिव्रता नारी एक पति के बिना और किसी को स्वप्न में भी याद नहीं कर सकती, ऐसे हर समय एक बाप दूसरा न कोई – यह वफादारी का प्रत्यक्ष स्वरूप देखा। विशाल नई स्थापना की जिम्मेवारी के निमित्त होते भी वफादारी के बल से, एक बल एक भरोसे के प्रत्यक्ष कर्म में हर परिस्थिति को सहज पार किया और कराया। ऐसे फालो फादर करो।

15) ब्रह्मा बाप एक तरफ अति निर्माण, वर्ल्ड सर्वेन्ट; दूसरे तरफ ज्ञान की अर्थारिटी। जितना ही निर्माण उतना ही बेपरवाह बादशाह। सत्यता की निर्भयता—यही सेवा की विशेषता है। कितना भी सम्बंधियों ने, राजनेताओं ने, धर्म-नेताओं ने नये ज्ञान के कारण ऑपोजीशन किया लेकिन सत्यता और निर्भयता की पोजीशन से जरा भी हिला न सके। निर्माणता और अर्थारिटी के बैलेंस के कारण

गाली देने वाले भी आज मन से झुक रहे हैं। तो सेवा में निर्माण-भाव, निमित्त-भाव, बेहद का भाव। इसमें फालो फादर करते हुए सिद्धिस्वरूप बनो।

16) ब्रह्मा बाप कर्म करते कर्म-बंधन मुक्त, कर्म-संबंध मुक्त रहे। शरीर के बंधन से मुक्त फरिश्ता अर्थात् कर्मातीत, सेकण्ड में नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप बनें। तो इन कदमों पर कदम उठाते चलो। संकल्प, स्वभाव संस्कार, नेचर में भी बाप समान बनो। अगर अभी तक कहते हो कि मेरा स्वभाव ऐसा है, मेरी नेचर ऐसी है वा न चाहते भी संकल्प चल जाते हैं, बोल निकल पड़ते हैं – तो समान और सम्पन्न कैसे बनेंगे।

17) ब्रह्मा बाप ने मधुवन में रहते कभी यह संकल्प नहीं किया कि मेरा तो सिर्फ मधुवन है, बाकी पंजाब, यू.पी., कर्नाटक आदि बच्चों के हैं? तो हदों की एरिया के बंधन से निकल बेहद में रहो। ब्रह्मा बाप से प्यार है तो फालो फादर करो। मेरे को तेरे में, हद को बेहद में समा दो। सबके संकल्प, बोल, सेवा की विधि बेहद की अनुभव हो। जो भी आपको देखे - बेहद के बादशाह का नशा अनुभव हो। हद की दिल वाले बेहद के बादशाह बन नहीं सकते।

18) जो ब्रह्मा बाप के संस्कार वही बच्चों के संस्कार। ब्रह्मा बाप ने साकार शरीर के अन्त में भी याद दिलाया - निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी—ये हैं ब्रह्मा बाप के और ब्राह्मणों के संस्कार। यही संस्कार नेचुरल हों। ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही है निरहंकारी। इसमें पूरा फालो करना है। हर कर्म करते चेक करना है कि तीनों ही संस्कार इमर्ज रूप में हैं?

19) जैसे बाप ब्रह्मा पूज्य बनेंगे, तो फालो करने वाले भी अवश्य पूज्य ही बनेंगे। सारा कल्प ब्रह्मा बाप के साथ राज्य का, पूजा का और पूज्य बनने का—सब पार्ट बजायेंगे। पूजा भी ब्रह्मा बाप के साथ शुरू करेंगे इसलिए गाया हुआ है—आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी। तो जो भी कर्म करो उसमें चेक करो कि ब्रह्मा बाप समान श्रेष्ठ कर्म है या साधारण कर्म है? जब विशेष कर्म करने वाले बनेंगे तब ही विशेष ब्रह्मा आत्मा के साथ पार्ट बजायेंगे।

20) ब्रह्मा बाप ही सबसे नम्बरवन पुरुषोत्तम आत्मा है इसीलिए ब्रह्मा को आदि देव कहा जाता है। ‘फरिश्ता ब्रह्मा’ भी उत्तम हो गया और फिर भविष्य में देव आत्मा बनने के कारण पुरुषोत्तम बन जाते। लक्ष्मी-नारायण को भी पुरुषोत्तम कहेंगे। ऐसे आप बच्चे भी सदा इसी स्मृति में रहो कि मैं पुरुषोत्तम युग की पुरुषोत्तम आत्मा हूँ। उठना, बैठना, खाना-पीना कोई भी कर्म साधारण न हो। साधारण कर्म करते भी श्रेष्ठ स्मृति, श्रेष्ठ स्थिति हो। जो भी आपको देखे वह महसूस करे कि यह कोई साधारण व्यक्ति नहीं है। जैसे ब्रह्मा बाप साधारण तन में होते भी पुरुषोत्तम अनुभव होते थे। अभी अव्यक्त रूप में भी पुरुषोत्तम की झलक है! तो फालो फादर। साधारण कर्म में भी स्थिति साधारण नहीं, महान हो।

21) जैसे ब्रह्मा बाप सदा हर्षित और गम्भीर - इन दोनों के बैलेन्स से एकरस स्थिति में रहे। ऐसे फालो फादर। कभी किसी बात में कम्प्यूज नहीं होना, न कभी अपना मूड चेंज करना। हर कर्म में फालो ब्रह्मा बाप। सदा अपने को विजयी अर्थात् मायाजीत अनुभव करते उड़ते चलो। व्यर्थ संकल्प के रूप में मैं भी माया का वार न हो।

22) सदा करनकरावनहार की स्मृति से ब्रह्मा बाप समर्थ बन फरिश्ता बनें। ऐसे फालो फादर। चेक करो कभी माया मदर फादर तो नहीं बन जाती है? वह भी बड़ी अच्छी पालना और प्राप्ति कराती है। लेकिन वो सब है धोखे की प्राप्ति। पहले प्राप्ति, फिर धोखा। तो परखना है कि यह माया है या बाप है? धोखा खाकर परखना, यह कोई समझदारी नहीं है। ज्ञानी तू आत्मा पहले परखकर स्वयं को बचा लेते हैं।

23) हर एक की विशेषता देखो लेकिन फालो फादर करो। आपस में रिगार्ड रखो लेकिन गाइड एक बाप है। कोई भाई-बहन गाइड नहीं बन सकता। गाँड गाइड है और साकार एगज़ाम्पल ब्रह्मा बाप है। कोई भी निमित्त है लेकिन निमित्त बनाया किसने? बाप ने बनाया। तो फिर बाप याद आयेगा ना। ब्राह्मण अर्थात् सदा ब्रह्मा समान ब्रह्माचारी। जो ब्रह्मा बाप का आचरण वही सर्व ब्राह्मणों का आचरण अर्थात् कर्म हो। उच्चारण भी ब्रह्मा बाप समान हो। तब कहेंगे फालो फादर।

24) ब्रह्मा बाप ने अपने आराम का समय भी विचार सागर मंथन कर बच्चों के प्रति लगाया। रात्रि में भी जागकर बच्चों को योग की शक्ति दी। ये चरित्र तो सुने हैं ना? तो फालो फादर किया या सिर्फ सुन लिया? सुनना अर्थात् करना। ब्रह्मा बाप ने सदा जी हज़ूर जी हाज़िर किया। कभी ब्रह्मा बाप से शिव बाप अलग नहीं हुए, हाज़िर-नाज़िर रहे। बच्चे ने कहा बाबा और बाप ने कहा मीठे बच्चे। मन की स्थिति में सदा हाज़िर और नाज़िर अनुभव किया। सेवा में सदा जी हाज़िर किया। चाहे रात हो, चाहे दिन हो, सेवा का डायरेक्शन मिला और प्रैक्टिकल किया और कर्म में सदा हाँ जी किया। तो आप भी फालो करो। श्रीमत में कभी हाँ जी, कभी ना जी नहीं करना। प्यार का सबूत दिखाओ।

25) ब्रह्मा बाप ने अन्त तक बड़ी आयु होते हुए भी, तन का हिसाब चुक्त् करते हुए भी बेहद के वैराग्य की स्थिति प्रत्यक्ष दिखाई। साधनों को स्व प्रति स्वीकार नहीं किया। स्व प्रति बेहद का वैराग्य हो, सेवा प्रति साधन को कार्य में लगाओ। लेकिन साधन अलबेलापन नहीं लाये। इसमें फालो फादर करो।

26) ब्रह्मा बाप बच्चों के प्रति अति स्नेही रहे, सेवा के निमित्त बच्चों को सदा याद करते। मोह नहीं रहा लेकिन दिल का प्यार रहा। ब्रह्मा बाप का अपना स्वार्थ नहीं रहा, लेकिन बच्चों में सेवा अर्थ अति स्नेह रहा। साथ रहते, बच्चों को सामने देखते भी कोई देह के रूप में याद सताई नहीं। एकदम न्यारा और प्यारा रहा। इसी धारणा से

स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा बनें। कोई मेरापन नहीं रहा, देहभान से भी नष्टोमोहा। तो फालो फादर करो।

27) ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो, शिक्षादाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल में रखते। प्यार कोई बाहों का नहीं, लेकिन प्यार की निशानी है - अपनी शुभ भावना से, शुभ कामना से कैसी भी माया के वश आत्मा को परिवर्तन करना। किसी के प्रति घृणा भाव नहीं, यह तो बदलने वाले ही नहीं हैं, यह तो हैं ही ऐसे, नहीं। सदा रहमदिल। सिर्फ शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना, रहमदिल यह सहज काम करता है।

28) जैसे ब्रह्मा बाप को मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देते और फिर उसको बहुत प्यार भी करते, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती। तो फालो फादर। क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है **फालो फादर**। सिर्फ कापी करना है, अपना दिमाग नहीं चलाना है।

29) ब्रह्मा बाप की यही एक शुभ आशा रही, कि मेरे हर बच्चे के चेहरे पर रूहानियत हो, मुख में मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो। सदा महादानी बनने वाले की मूड एकरस हो। हर एक देवता बनने वाली आत्मा देने वाली हो। लेवता नहीं देवता। आपको कोई कुछ भी दे लेकिन आप सुख की अंचली, शान्ति की अंचली प्रेम की अंचली दो।

30) आपके साथ कोई क्या भी करता है, दुःख भी देता है, इन्सल्ट भी करता है, लेकिन आपका कर्तव्य है सबको सुख देना। दुःख देने वाले को फालो नहीं करना है बापदादा को फालो करना है। ब्रह्मा बाप ने कभी किसी को दुःख दिया वा सुख दिया? तो आप मास्टर ब्रह्मा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं को क्या करना है? कोई आपको बहुत दुःख देवे, गाली देवे, इनसल्ट करे, तो सोचना मेरा कर्तव्य क्या है! उसका कर्तव्य देख अपना कर्तव्य नहीं भूलो। वह गाली दे रहा है, आप सहनशील देवी, सहनशील देव बन जाओ। आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगायेंगे।

31) बापदादा समय के प्रमाण अब यही चाहते हैं कि एक शब्द सदा स्मृति में रखो - बाप से हुई सर्व प्राप्तियों का, स्नेह का, सहयोग का रिटर्न करना है। रिटर्न करना अर्थात् समान बनना। दूसरा - अब हमारी रिटर्न-जर्नी (वापिसी यात्रा) है। एक ही शब्द **रिटर्न** सदा याद रहे। इसके लिए हर संकल्प, बोल और कर्म को ब्रह्मा बाप से टैली (मिलान) करो। बाप का संकल्प क्या रहा? बाप का बोल क्या रहा? बाप का कर्म क्या रहा? इसको ही कहा जाता है फालो फादर। कुछ भी नया सोचने, नया करने की आवश्यकता नहीं, जो बाप ने किया उसमें फालो फादर।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

“बुद्धि को क्लीन और क्लीयर रखो तो सर्व शक्तियाँ सहज धारण कर सकेंगे”

(गुल्जार दादी जी 13-07-06)

बापदादा आप सबके संगठन को देख रहा है। बाबा हम बच्चों से क्या चाहते हैं, वो तो हरेक बच्चे की विशेष स्मृति में रहता है। दो बातें हैं - एक है स्व प्रति, दूसरा है सेवा प्रति। इन दोनों बातों में सब बातें आ जाती हैं। धारणाएँ हैं हमारी, लेकिन स्व परिवर्तन में धारणाएँ भी आ जाती हैं और सेवा में भी, धारणा के बिना सेवा में सफलता होती नहीं है। स्व के प्रति बाबा की क्या प्रेरणाएँ हैं। बाबा यही चाहते हैं कि मेरा हर बच्चा राजा बच्चा हो क्योंकि हमारा नाम ही है राजयोगी। अगर हम राजा बन करके चलें तो यह कर्मन्द्रियाँ कभी धोखा नहीं दे सकती हैं। अगर राजा कमजोर है तो कर्मचारी या कर्मन्द्रियाँ धोखा दे सकती हैं। तो बाबा यही चाहते हैं कि कोई भी प्रजा योगी नहीं हो। राजयोगी राजा बनकर राज्य करे, स्वराज्य करे क्योंकि स्वराज्य के आधार से विश्व का राज्य प्राप्त होना है। स्व राज्य नहीं तो विश्व का राज्य प्राप्त होना मुश्किल है। इसलिए बाबा यही चाहता है कि हरेक बच्चा मेरा राजा बच्चा बने। दूसरा ब्रह्मा बाप ने साकार में जो जैसे कदम उठाये, उस कदम के पीछे कदम उठाये। ज्यादा सोचने की जरूरत भी बाबा बच्चों को नहीं देता है। क्या करें या नहीं करें, इसमें कभी राइट जवाब आता है, कभी नहीं आता है। सिर्फ बाबा को फालो करो, संकल्प में भी यही सोचो कि क्या यह ब्रह्मा बाबा का संकल्प रहा! ज्यादा सोचने की भी जरूरत नहीं है। जो बोल बाबा ने बोला है वही हमको बोलना है। जो कर्म करावनहार करा रहा है वही हमको करना है। यह स्व के प्रति बाबा की हम बच्चों के लिए आशाएँ हैं। तो ब्रह्मा बाप समान बनो। और निराकारी रीति से निराकार, शिवबाबा जैसे बनो। जैसे निराकार बाबा आते हैं साकार शरीर में, साकार रीति से सब काम किया, लेकिन न्यारा और प्यारा रहा। प्रवेश तो हुआ ना। हम भी प्रवेश हुए लेकिन हम सदाकाल के लिए हैं, वो कुछ समय के लिए लेकिन प्रवेश होते हुए भी करके दिखाया, कितना न्यारा और सर्व का प्यारा रहा। इसी रीति से बाबा सभी से यही चाहता है। तीसरी बात जो बच्चे हर बात में इतनी मेहनत करते हैं, तो योद्धे नहीं बने, योगी बनें। योगी के बजाए योद्धे बन जाते हैं तो युद्ध करने के संस्कार बन जाते हैं। अगर योद्धे पन के संस्कार बन जाते हैं तो उसको मिटाने में समय बहुत जाता है और एनर्जी भी जाती है। और सेवा के लिए जो समय मिला है वो भी हम नहीं दे सकेंगे। अपने में ही लगे रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम्हारे को टाइल है, मास्टर सर्वशक्तिमान हो। जब मास्टर सर्वशक्तिमान हो तो युद्ध करने की क्या जरूरत है। लेकिन सर्व शक्तियाँ समय पर काम में आवें उसके लिए बाबा ने अन्डरलाइन

कराया था कि जिसकी बुद्धि क्लीन और क्लियर हो तो शक्तियों को धारण कर सकेंगे। नहीं तो शक्तियों को समझने की नॉलेज होगी लेकिन पॉवर नहीं होगी।

भोलानाथ को अगर राजी करना है तो सिर्फ सच्ची और साफ दिल चाहिए। अगर दिल साफ है तो भोलानाथ अपना बना ही है। और जब भोलानाथ अपने साथ है उसके लिए क्या बड़ी बात है। माया तो उसके सामने आ ही नहीं सकती। सिर्फ मन बुद्धि को बिजी रखो। अगर मायाजीत बनना है तो जैसे कर्म का टाइमटेबल बनाते हो वैसे अपने मन का टाइमटेबल फिक्स करो। अगर मन का टाइमटेबल फिक्स होगा तो माया के आने का समय ही नहीं होगा। विजय का तिलक हमेशा लगा ही हुआ है।

सेवा के प्रति बाबा कहते हैं कि सेवा करते हो, सफलता कभी मिलती है, कभी नहीं मिलती है, उसका कारण क्या? बाबा ने कहा था कि आजकल मनुष्य शब्दों को नोट नहीं करते लेकिन शब्दों में जो अनुभव का प्रभाव पड़ा होता है वो दिल को लगता है। वैसे ही अगर आप नॉलेजफुल होकर नॉलेज को वाणी द्वारा रिपीट करते हो, तो उस समय अच्छा तो कहेंगे लेकिन अच्छा बनेंगे नहीं। जो अनुभव से शब्द बोले जाते हैं वो अनुभव अनुभवी बनाता है। सेवा वाणी से करते हो लेकिन उस समय ध्यान रखो, अनुभवी बोल हैं? या नॉलेज के आधार पर ज्ञान दे रहे हैं। अनुभव के ऊपर बाबा का अटेन्शन बहुत है। पहले हर बात का खुद में अनुभव है? जो अनुभवी होता है वो अथॉरिटी से बोलता है। और भी अथॉरिटी हैं लेकिन अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़ी है। सेवा के प्रति बाबा कहते सिर्फ वाणी नहीं चलाओ। एक ही समय पर तीनों सेवा करो। मन्सा भी चलाओ, वाणी तो कान में जायेंगी ही। कर्मणा अर्थात् हमारी चाल, व्यवहार आदि देखकर प्रभाव। स्व के प्रति और सेवा के प्रति बाबा की यही आशाएँ हैं। शॉर्ट में बाबा यही कहते हैं समान बनो, सम्पन्न बनो।

ब्राह्मणों की चाल में संगठन की शक्ति जो है वो जरूरी है। संगठन की शक्ति जो चाहे वो कर सकती है। इसमें बाबा जो रिजल्ट देखने चाहते हैं वो अभी कम है। संगठन की शक्ति कैसे बढ़ाये? हम सब निमित्त बनें हुए बाबा से इस बात का सर्टीफिकेट लें, संगठन की शक्ति जो बाबा चाहता है। उस रूप से प्रैक्टिकल सबूत दें कि हम सब एक हैं, एक की मत पर चलने वाले हैं, एक ही बाबा के समान सम्पन्न बनने वाले हैं। इसलिए भट्टी में इसको और मजबूत बनने का प्लैन भी बनायें और बाबा को सबूत दें।

“हर बात में आज्ञाकारी अर्थात् पिताव्रत और वफादार अर्थात् सतीव्रत बनना है, किसी भी देहधारी के साथ लगाव झुकाव ना हो”

(दादी जानकी जी 23-02-06)

मधुबन में आने से बाबा तो मिलता है पर और भी बहुत कुछ मिलता है। ऐसा संगठन विश्व भर में कहीं भी नहीं हो सकता है। भले कितने भी बड़े प्रोग्राम रखो, पर मधुबन में अपने हमजिन्स साथियों का संगठन है। यहाँ आते हैं तो बड़ों को देखते हैं। वैसे तो कोई दादी एक जगह साल में एक बार भी नहीं जायेगी, कहीं तो दस साल में भी नहीं गई होगी। और यहाँ सब दादियाँ मिलती हैं, दादा भी मिलते, बाबा भी मिलता और व्यवस्था कैसी होनी चाहिए, यहाँ कितनी बातें देखने सीखने को मिलती हैं। कोई बैठके सिखावे तो टाइम लगता है क्योंकि उसमें बुद्धि चलानी पड़ती है लेकिन देख करके सीखना सहज होता है। आज के जमाने में हर बात सीखने के लिए, कोर्स करने के लिए कहाँ जाना पड़ता है और कुछ खर्च भी करना पड़ता है। पुराने जमाने में तो देख करके ही सबकुछ सीखना होता था। अभी हम संगमयुग के समय बाबा को देख करके ही सब कुछ सीख रहे हैं। यह कहता है शिवबाबा को याद करो, इसको देख करके फॉलो करो।

किसी ने प्रश्न पूछा कि आप बापदादा दोनों को इकट्ठे कैसे देखते हो? दो आँखें हैं, दोनों आँख इकट्ठी देखती है। एक आँख से दिखाई दे और दूसरी आँख से दिखाई न दे, तो क्या लगेगा? समथिंग राँग है। दोनों इकट्ठे देखती हैं तो एक्यूरेट अच्छा देखती है। फिर पूछते हैं कौन-सी आँख में कौन-सा बाबा देखती हो? जब तीसरा नेत्र बन्द है तो क्वेश्चन उठता है, क्या, क्यों, कैसे? इसीलिए बाबा ऐसा तीसरा नेत्र देता है जो आँख न जाने दिल पहचाने...। जब दिल से पहचान आती है तो आँख खुल जाती है। मैं कौन हूँ? मेरा बाबा कैसा है? कितना सुन्दर है, वो मूर्ति, जितना पहचानते जा रहे हैं उतनी सुन्दरता दिखाई देती है। पहचाना तो पाया, ऐसा अनुभव करते रहेंगे। क्या पाया? भगवान क्या दे रहा है, सुनाया या बतलाया नहीं जाता है, अनुभव किया जाता है। कहते भी हैं अनुभव करके देखो। जैसे दुःख का अनुभव होता है, ऐसे ईश्वरीय सुख का भी अनुभव हो। अनुभव सदा याद रहता है।

मेरा बाबा ऐसा है जो और कुछ मेरा है ही नहीं, तो मैं का छिपा हुआ जो सूक्ष्म अभिमान रहा हुआ है वह भी बिचारा आपेही चला जायेगा। तो ऐसी स्थिति हो जो परमात्मा रोज मुरली में कहता है - आत्म-अभिमान भव। तो बाबा की याद में प्रैक्टिकली आत्म-अभिमान नहीं है, देह-अभिमान नहीं है। दुःख की फीलिंग नहीं है, अशान्ति का नाम-निशान नहीं है क्योंकि आत्मा में जो देह का अभिमान था वो चला गया, तो आत्मा अपने आत्म-अभिमान स्थिति के नशे में आ गई। शरीर में होते भी शरीर के भान से परे।

हर एक बाबा का बच्चा सच्ची दिल से पुरुषार्थ करे तो सफलता साथ है जरूर। तो जैसे बाबा हमें कहता है, ठीक ऐसे ही पुरुषार्थ करके दिखाना है। जो आज्ञाकारी बच्चा होता है, उसको जो आज्ञा मिले उस पर चलना अच्छा लगता है क्योंकि वो जानता है कल्याणकारी शिवबाबा है, वो जो करता कराता है, संगमयुग है उसमें ही कल्याण है। ऐसे दिल से समझके करने में मार्क्स मिल जाती हैं। तो आज्ञाकारी बनने में जो फुल मार्क्स ले लेवे तो पास विथ ऑनर में आ सकते हैं। अनुभव यह कहता है। जो बहुत बातों में आज्ञाकारी बनना नहीं जानते हैं, उन्हें मार्क्स बहुत कम मिलती हैं।

जब स्टूडेंट लाइफ है तो पास विथ ऑनर में आना है। पहले हर बात में आज्ञाकारी बनना है। फिर वफादारी, किसी भी देहधारी के साथ न लगाव न झुकाव। वफादारी में सतीव्रत। आज्ञाकारी में पिताव्रत पक्का। आज्ञाकारी है तो निश्चय का बल है इसलिए निश्चित है। याद में परिपक्व ऐसे बनें जो दूसरी कहीं नजर न जाये। न व्यक्ति, न वैभव तब इतनी प्राप्ति है। जरा सा भी इसमें ऑख गई तो शक्ति नहीं आयेगी। तो यह रॉयल्टी भी नहीं है क्योंकि हम किसके बच्चे हैं और कहाँ ऑख चली जाये...। लोभ या मोह वश गुस्सा जरूर होगा तो वफादार बन नहीं सकता है। वफादार को यह अच्छी तरह से पता होता है कि जो बाबा से मिलता है, वो कहीं से नहीं मिलता है। वफादार निर्भय, निर्वैर है। वफादार है तो बाबा जिम्मेवार है। ऐसों की बाबा अपने आप सम्भाल करता है, उनको यह फिक्र नहीं होता है कि मेरे को कौन सम्भालेगा? या मेरी जो जिम्मेवारी है उसको कौन सम्भालेगा? अगर यह ख्याल भी आता है तो उसने न अपने को आत्मा समझा है, न परमात्मा का बच्चा हूँ यह महसूस किया है।

जो ऑनैस्ट है उसे कभी हेरा-फेरी करने का ख्याल भी नहीं आ सकता है। ऑनैस्ट सदा फेथफुल और ओबीडियन्ट होता है। अन्दर एक बाहर दूसरा हो नहीं सकता। वह अच्छी भावना वाला, मीठा है। तो अपना पक्का प्रिंसीपल बनाके रखो जो आत्मा इतनी स्वच्छ साफ सुथरी हो जाये। तो अपने-अपने पार्ट अनुसार अपने स्थिति की स्मृति ऐसी रहे, जो सहज समय पास होता रहे और हम आगे जा रहे हैं, ऐसा लगने लगे। जैसे हरेक एंजिल का पार्ट अपना है, कोई कैसे बैठा, कोई कैसे... पर है तो एंजिल ना। एंजिल के हाथ पाँव चलते हुए नहीं देखते, पर उनकी आँखें और पंख ही काम करते दिखाई देते। एंजिल के आँखों की भाषा बड़ी मीठी है। तो दिन-प्रतिदिन हमारे नयनों की भाषा भी ऐसी हो जो सबको मधुरता

का, दिव्यता का अनुभव होने लगे। बाबा को देखो हजारों को कैसे खुश कर देता है। हम भी बाबा के बच्चे सदा खुश रहके सबको ऐसे खुश करते रहें। तो जैसे बाबा चाहता है वैसे बनना है। दिल में सदैव रहम, स्नेह, सच्चाई हो, तो दिल सदा ही खुश रहेगी। कभी किसी को दिल लेने की जरूरत नहीं पड़े, ऐसी हमारी दादी को देखो, कभी

अपसेट नहीं हुई होगी। जैसा मेरा बाबा सबके दिलों को जानने वाला, ऐसे बनना है। तो यहाँ मधुबन में ही ऐसी बातें सुनने, हर बात में सीखने को मिलता है, भण्डारे में जाओ या सैर करो, सब जगह कुछ तो सीखने को मिलता ही है। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृतवचन

हमारी तपस्या का मूल लक्ष्य - व्यर्थ संकल्प और संस्कारों को समाप्त करना

1) इस नये वर्ष में स्व व सर्व के प्रति प्रेरणादायक बनने के लिए हम सब विशेष भिन्न-भिन्न रूप से तपस्या करें। हमारी तपस्या का मूल लक्ष्य हो - व्यर्थ संकल्पों, पुराने कड़े संस्कारों को समाप्त करना। किसी भी परिस्थिति के कारण जो संकल्प विकल्प उठते हैं और हमारे बुद्धियोग को तोड़ते हैं, जिससे सारी शक्ति व्यर्थ हो जाती है। अब वह व्यर्थ संकल्प विकल्प समाप्त हो जाएं।

2) व्यर्थ संकल्प उठने का कारण है - कोई न कोई सूक्ष्म में भी इच्छा। जैसे बाबा कहते हैं - बच्चे तुम्हें कोई भी देहधारी याद नहीं आना चाहिए। अगर याद आता है तो उसका कारण है - जरूर उसके पीछे कोई इच्छा या स्वार्थ है। कहाँ भी बुद्धि जाती है तो सूक्ष्म चेक करो - जरूर उसके पीछे स्वार्थ होगा। कईयों की बुद्धि में आता है मुझे मान मिले, मेरा शान हो, मेरी इज्जत हो...। मेरा नाम हो... यह सूक्ष्म इच्छा भी व्यर्थ संकल्प उठने का कारण है। ऐसी इच्छाएं तपस्या में विघ्न रूप हैं। इसके लिए बेहद का वैराग्य चाहिए।

3) जैसे कई समझते हैं मैं कोई भी सेवा करता हूँ तो उसकी कदर नहीं की जाती। हमारी सेवा को कोई स्वीकार नहीं करते, मानते नहीं हैं। सेवा तो की लेकिन सूक्ष्म में कई प्रकार का मेवा चाहते हैं। तो चाहना माना ही इच्छा, आसक्ति है। कोई भी प्रकार की इच्छा होगी तो उसका सामना जरूर करना पड़ेगा। जैसे धन इकट्ठा करने की शक्ति का शौक होता है तो उसके लिए मेहनत करनी पड़ती, बिजनेस में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता। इसका अर्थ यह नहीं है कि शरीर निर्वाह अर्थ कर्म ही नहीं करना है। करना जरूर है लेकिन एक है शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करना अथवा बाबा की सेवा के लिए कर्म करना और दूसरा है शौक अथवा इच्छाओं की पूर्ति के लिए कर्म करना। फिर ऐसे कर्म में स्वयं को बिजी कर लेते जो कन्ट्रोल से बाहर हो जाता, उसके लिए नींद भी नहीं करते। यदि उसमें अच्छा रसपान्ड नहीं मिलता तो नाउम्मीद हो जाते। यह कोई बैलेन्स नहीं है।

4) तपस्या कहती है - कर्म करो लेकिन बैलेन्स रखो। सेवा भले करो लेकिन आसक्ति नहीं रखो, स्वार्थ न हो। घूमो फिरो, खाओ पियो लेकिन अनासक्त रहो। अनासक्त स्थिति ऐसी होती है जो सब व्यर्थ संकल्पों से छुड़ा देती है। तो सूक्ष्म चेक करो कि व्यर्थ संकल्प यदि उत्पन्न होते हैं तो उसका कारण क्या है! क्या किसी भी प्रकार

का शौक है या कोई आसक्ति है। हर बात का हुल्लास रखो, उमंग से करो लेकिन उसमें आसक्ति होकर फँस नहीं जाओ। हर कार्य निमित्त बनकरके करो।

5) मान लो कोई ने मुझे कुछ कहा, हमारे कानों तक वह बात आई और मेरी खुशी गुम हो गई। ऐसी फीलिंग आई जो चेहरा ही मुरझा गया। तो तपस्या करने के पहले चेक करो कि क्या हमने इस फीलिंग के फलू को समाप्त किया है? मेरी खुशी को कोई भी बात नीचे तो नहीं ले आती? छोटे से छोटी बात हो या बड़ी बात हो... किसी भी बात का मेरे माइन्ड पर असर तो नहीं आता है? यदि माइन्ड पर असर आया, फीलिंग आई तो तपस्या भंग हुई।

6) बाबा कहते बच्चे, तुम्हारी स्थिति ऐसी चाहिए जैसे कमल का फूल। कमल फूल अर्थात् निर्लिप्त। सब कार्य करो लेकिन निर्लेप रहकर करो। निमित्त मात्र करो। तपस्या का आधार ही है - न्यारे और प्यारे बनो, इससे स्थिति अडोल रहेगी। न्यारे प्यारे रहेंगे तो कोई भी इच्छा आसक्ति नहीं पैदा होगी। जब कोई भी आसक्ति नहीं, मान-शान, बड़े छोटे, अच्छे-बुरे कोई इच्छा नहीं तो आपकी स्थिति बहुत-बहुत स्वीट हो जायेगी। फिर ऐसी स्थिति से याद में बैठो तो स्थाई याद हो जायेगी। तपस्वीमूर्त बन जायेंगे।

7) तपस्वीमूर्त बनने के लिए इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। किसी भी प्रकार की अंश मात्र भी इच्छा न हो। किसी व्यक्ति से स्वार्थ न हो। वैभवों, वस्तुओं की चाहना भी न हो। ऐसी निःस्वार्थी जीवन बनाओ। इसके लिए बुद्धि में त्यागवृत्ति हो। जब हम हैं ही त्यागी, वैरागी तो तपस्वी तो बन ही जायेंगे।

8) तपस्वीमूर्त बनने के लिए - सुनते भी न सुनो, देखते भी न देखो। इसके लिए चाहिए सहनशीलता कईयों की दिल बड़ी कोमल होती है। ज्ञान में कोमल दिल नहीं चाहिए। कोमल दिल वाले को छोटी-छोटी बात में फीलिंग आती, जो उदासी ले आती है। कोमल दिल वाला सदा कमजोर होगा, हिम्मतवान नहीं हो सकता। वह डरपोक होगा। कोमलदिल वाला ही जवाब देता कि क्या करूँ मेरे में सहनशक्ति नहीं है। संगठन में चलने के लिए सहनशीलता का गुण बहुत जरूरी है। क्योंकि अनेक प्रकार की बातें सामने आती हैं। कभी कोई भाव स्वभाव होगा, कभी कोई मुझे कुछ बोल देगा... इसलिए सहनशीलता और धैर्यता का गुण बहुत जरूरी है। धैर्यता

के लिए सहनशीलता जरूर चाहिए। तो इन दोनों गुणों को धारण कर तपस्वी बनो।

9) तपस्या अर्थात् अपना बुद्धियोग एक बाबा से रखो। एक बाबा को ही देखो, बाबा से ही सुनो, बाबा के संग बैठो...। बाबा से मीठी-मीठी बातें करो - एक बाबा के सिवाए और कुछ भी दिखाई न दे। उनके दिल में सर्व के प्रति स्नेह रहता, सब मीठे प्यारे लगते। वो किसी से भी नफरत करता। हर एक की विशेषता को ही देखता है।

10) रोज़ चेक करो कि मेरे में कौन सी कमी है जो व्यर्थ संकल्प वा विकल्प उठते हैं। दिनचर्या में चेक करो कि किस बात ने, किस कारण ने, किस रूप से मेरी बुद्धि में व्यर्थ संकल्प उत्पन्न किया जिससे बुद्धियोग टूटा। यदि बुद्धियोग टूटता नहीं तो निरन्तर आत्मा का दीपक जैसे जगा हुआ है। फिर खुद को और दूसरों को भी रोशन करते रहेंगे। खुद में भी साइलेन्स की शक्ति भरी हुई होगी और दूसरों को भी वही वायब्रेशन मिलते रहेंगे।

11) अब अपनी ऐसी स्थिति रखो जो सदा मौज में और मजे में रहे। ऐसा कभी भी न हो जो कोई बात का चिंतन नींद ही फिटा दे। कईयों में व्यर्थ चिंतन करने की ऐसी आदत होती है जो अपना टाइम एनर्जी वेस्ट करते रहते, नींद भी खराब कर देते हैं। छोटी सी बात होगी और सोचेंगे बहुत लम्बा। बात कुछ भी नहीं होगी और चिंतन इतना बढ़ा करेंगे जो राई को पहाड़ बना लेंगे। लेकिन इन सभी का

सूक्ष्म कारण है - स्वार्थ, इच्छा, चाहना। इसने मेरी इन्सल्ट क्यों की। बस इतनी सी बात का विस्तार ऐसा कर देंगे जो पूरा 24 घन्टे की एनर्जी वेस्ट कर देगा। फिर वह तपस्या क्या करेंगे!

12) तो तपस्या के पहले अपना चार्ट चेक करो और चेकिंग करके परफेक्ट बनो। साइलेन्स की शक्ति, तपस्या की शक्ति ऐसी बढ़ाओ जो सूक्ष्म में भी कोई इच्छा न रहे। अगर अब तक हो तो उसे समाप्त कर दो। इच्छा होगी तो उसकी निशानी है - फीलिंग जरूर आयेगी। कोई मेरी बात दूसरे से कह रहा है तो उसका वायब्रेशन आयेगा, चिंतन चलता रहेगा। लेकिन हम अगर अच्छे हैं तो मौज में रहें। हमने बुरा ही क्या किया है जो ऐसे चिंतन में समय गंवाते हैं। सदा बी गुड, डू गुड का स्लोगन याद रखो तो किसी भी बात की फीलिंग नहीं आयेगी। सदा डबल ओ के रहो। फिर नेचुरल हल्के हो जायेंगे।

13) योग में बैठते ही लगे कि हम बिल्कुल हल्के हैं, उड़ रहे हैं। हमारी बुद्धि स्वच्छ साफ आइने की तरह हो तो उसमें कई अनुभव कर सकते हैं। यही अभ्यास हमें निरोगी बनायेगा, सम्पूर्ण बनायेगा। इस तपस्या से सारे विश्व में आवाज पहुँचेगा। हम सबकी एक ही भावना है कि विश्व का कल्याण हो। परिवर्तन हो, सुखमय संसार आये। यही एक संकल्प है। बाकी हमें और कुछ नहीं चाहिए। अच्छा। ओम् शान्ति।

स्मृति दिवस के लिए विशेष सूचनायें

- 1) अव्यक्त दिवस के निमित्त 16-17-18 जनवरी 2022, तीन दिन विशेष तपस्या करने के लिए मधुबन रोज़री में सभी के पास प्वाइंटस भेज दी गई हैं। देश विदेश के सभी ब्रह्मा वत्स अवश्य इस बात पर पूरा अटेन्शन देंगे।
- 2) पूरे जनवरी मास के लिए ऊपर लिखी हुई फालो फादर की एक प्वाइंटस प्रतिदिन क्लास में सुनाकर बोर्ड पर लगा दें। ताकि सभी ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखते हुए उनके समान सम्पन्न बनने का पुरुषार्थ कर सकें।
- 3) सभी पूरा ही मास अन्तर्मुखता की गुफा में रह अधिक से अधिक समय योग अभ्यास करें। चलते फिरते कर्म करते भी अव्यक्त वतन की सैर करते रहें।
- 4) आपके पास 5 मुख्य बातों का चार्ट भेज रहे हैं। सभी रोज़ अपनी चेकिंग करते हुए यह चार्ट भरें, इससे पूरा अटेन्शन बना रहेगा।

अपनी सूक्ष्म चेकिंग करने के लिए विशेष चार्ट

1) हर कर्म में सारथीपन की स्मृति (आत्म अभिमानी स्थिति) कितने परसेन्ट रही?							
2) संकल्प, श्वांस, समय रूपी खजाने को कितना सफल किया? परसेन्टेज में लिखें							
3) पांचों स्वरूपों का अभ्यास दिन में कितना बार किया? (संख्या लिखें)							
4) अमृतवेले एकान्तवास करते हुए अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति की? (हाँ या ना)							
5) सारे दिन में कितना समय बैठकर विशेष योग अभ्यास किया?							

नाम.....

सेवास्थान.....

दिनांक.....